खण्ड-10, अंक-1, वर्ष-2022, मु0प्र0 147-151
D.O.I.: https://doi.org/10.22445/avsp.v10i1.22
SJIF (2021) : 7.247

Importance of medicinal plants in Tharu tribal life

Pramila Pandey[1] and Narendra Shankar Pandey[2]
[1]Department of Botany, B.S.N.V. P.G. College, Lucknow-226 001, U.P., India
[2]Department of Botany, N.R.E.C. P.G. College, Khurja-203 131, U.P., India
pramila28@gmail.com, npbotany@gmail.com

Received: 31-08-2022, Accepted: 10-10-2022

Abstract- India has the largest population of tribes in the world. Tharu tribes have been found in the tarain region of Uttar Pradesh. These tribal communities have a long tradition of being dependent on forests for their various needs. They have acquired valuable knowledge on the use of wild plants for foods, fuel, fodder and health care and other purpose in their daily life. The purpose of this study is to document the disappearance of traditional indigenous tribes based on their oral tradition of using indigenous medicinal plants. These medicinal plants are used for treatment of various diseases of human being of digestive system, joints, liver, kidney etc.

Key words- Tribes, Tharu, medicinal plants, forest

थारू जनजातिय जीवन में औषधीय पौधों का महत्व

प्रमिला पाण्डेय[1] एवं नरेन्द्र शंकर पाण्डेय[2]
[1]वनस्पति विज्ञान विभाग, बी0एस0एनवी पी0जी0 कालेज, चारबाग, लखनऊ–226 001, उ0प्र0, भारत
[2]असिस्टेंट प्रफेसर वनस्पति विज्ञान, एन0आर0ई0सी0 पी0जी0 कॉलेज, खुर्जा–203 131, उ0प्र0, भारत
pramila28@gmail.com, npbotany@gmail.com

सार– भारत में जनजातिय संख्या विश्व में सबसे अधिक है। उत्तर प्रदेश के तराई इलाके में थारू जनजाति पायी जाती है। इन आदिवासी समुदायों को अपनी विभिन्न आवश्यकताओं के लिए वनों पर निर्भर होने के कारण, सदियों पुरानी पारम्परिक जानकारी है। इन्होंने अपने दैनिक जीवन में खाद्य, ईंधन चारा और स्वास्थ्य देखभाल और अन्य उद्देश्यों के लिए जंगली पौधों के उपयोग पर बहुमूल्य ज्ञान अर्जित किया है। इस अध्ययन का उद्देश्य स्थानीय निवासी जनजातियों के पारम्परिक स्वदेशी ज्ञान को उनकी मौखिक परम्परा के आधार पर देशी औषधीय पौधों के उपयोग से समाप्त होने का दस्तावेजी कारणों को जानना है। इन औषधीय पौधों का उपयोग आंतों, जोड़ों, यकृत, त्वचा और मानव के विभिन्न रोगों के उपचार के लिए किया जाता है।

बीज शब्द– जनजाति, थारू, औषधीय पौधे, वन

1. **परिचय**– भारत पादप विविधताओं से भरा हुआ देश है। पादप उत्पाद आदिकाल से ही फाइटोमेडिसिन का भाग रहे हैं और पादप साम्राज्य संभावित औषधि का खजाना है[1]। भारत में ४५,००० पौधों की प्रजातियाँ और लगभग ५५० जनजातिय समुदाय है[2] जो एक दूसरे के साथ जड़े हुए हैं। पौधों और उनके गुणों का पारम्परिक ज्ञान हमेशा पीढ़ी दर पीढ़ी इन जनजातियों में प्रेषित होता रहा है। यह पारम्परिक चिकित्सा ज्ञान भारतीय जनजातियों में धरोहर के रूप में विद्यमान है। थारू, नेपाल और भारत के सीमावर्ती तराई में पायी जाने वाली एक जनजाति है। जहाँ कई जनजातियाँ विकास की ओर आगे बढ़ रही है वही थारू जनजाति आज भी अपने परम्परागत रीति रिवाज और धार्मिक संस्कारों के साथ आधुनिक विकास की दौड़ में पीछे है। वे आज भी इस वर्तमान समय में हर तरह की बीमारी के लिए जड़ी बूटियों पर निर्भर है और उसी से अपना इलाज करते हैं। थारू लोग जंगलों में निवास करने तथा वनोपज पर निर्भर होने के कारण जंगली जड़ी बूटियों के अच्छे जानकार होते हैं। इन जनजातियों का प्रकृति के साथ अद्भुत सामन्जस्य होता है। यही कारण है कि इनकी अपनी परम्परागत चिकित्सा पद्धति है। इन शोध पत्र में थारू जनजातियों द्वारा प्रयोग होने वाले कुछ महत्वपूर्ण औषधीय पौधों का उनके प्रचलित नाम तथा उपयोग का वर्णन किया जा रहा है।

2. **अध्ययन क्षेत्र**– उत्तर प्रदेश के उत्तर पूरब के तराई बेल्ट में बलरामपुर जिला, पचफेड़वा, देवी पाटन मण्डल के अन्तर्गत आता है। देवीपाटन डिवीजन उत्तर में नेपाल के क्षेत्र से घिरा है।

3. **सामग्री और विधि**– थारू जनजातीय जीवन में औषधीय पौधों के महत्व के लिए वर्ष २०२०–२०२१ में एक प्रश्नोत्तर आधारित सर्वेक्षण का उपयोग करके पारम्परिक चिकित्सा पद्धति की जानकारी एकत्रित की गयी। इस सर्वेक्षण के दौरान पौधों के स्थानीय नाम जनजातीय लोगों द्वारा पौधों के औषधीय और पारम्परिक उपयोगों को मौके पर नोट किया गया और साहित्य की मदद से पुष्टि की गई। जनजातीय सर्वेक्षण द्वारा प्राप्त जानकारी के अनुसार उपयोग किये जाने वाले औषधीय पौधों की जानकारी **तालिका–1** में दी गई है।

तालिका–1

जनजातीय सर्वेक्षण द्वारा प्राप्त जानकारी के अनुसार उपयोग किये जाने वाले औषधीय पौधे

क्र0सं0	प्रचलित नाम	हिंदी नाम	वनस्पतिक नाम	फैमिली	उपयोग
1	रत्ती	गूंजा	एबरस प्रिकाटोरियस *Abrus precatorius*	लेग्यूमिनोसि	पत्ती का प्रयोग मिश्री के साथ करने से स्वरभंग में लाभकारी, गंजापन दूर करने के लिए लेप सिर पर लगाते हैं।
2	खैर	खदिर	एकासिया कुंद्रा *Acacia chundra*	लेग्यूमिनोसि	चर्मरोग में, दंत विकार में, कुष्ठरोग में।
3	कीकर	बबूल	एकासिया अरेबिका *Acacia arebica*	मिमोसी	चर्मरोग में, रक्त स्रावी रोग में, गोंद पौष्टिक तत्व के रूप में, मुख के छाले, गले के सूखने में इसको प्रयोग करते हैं।
4,	विल्व	बेल	एजेल मर्मेलॉस *Aegel marmelos*	रुटेसी	ताजे पत्तों का प्रयोग ज्वर, कफ, मधुमेह में।
5	पनश	कटहल	आर्टोकार्पस इंटीग्रीफोलिया *Artocarpus integrifolia*	मोरेसी	कच्चे फल, कटु वातघ्न एवं बल्य पके हुए फल, शीतल शुक्र दौर्बल्य में तथा पित्त संबधी रोगी में।
6	निम्ब	निम	एजाडिराक्टा इंडिका *Azadirachta indica*	मिलेएसी	छल का प्रयोग जुकाम, रक्त शर्करा के नियंत्रण में वेदनाहर में, कैन्सर नाशक, कीटाणु नाशक।
7	ब्रासी	जलजीम	बकोपा मोनियेरी *Bacopa monieri*	स्क्रोफ्यूलेरिएसी	पत्तों का चूर्ण, अवसाद एवं मानसिक दौर्बल्य में लाभ।

निम्न प्रचलित औषधीय पौधे थारू जनजाति के लोग अधिकता में प्रयोग करते हैं–

१. **अतिबला** (*Abutilon indicum*) अबुटिलों इण्डिकम, मलबेसी

प्रचलित नाम : कंधी
प्रयोज्य अंग : मूल की छल, पत्र तथ बीज
स्वाद : मधुर
गुण : दर्दनिवारक, कफनाशक
उपयोग : इसके बीज अर्श, पाइल्स में पत्तियों का प्रयोग पीड़ा नाशक के रूप में, पत्तों का सेक वेदनायुक्त स्थानों पर पत्तों तथा कवाथ देतशूल में तथा जड़ का प्रयोग ज्वर में करते है[3–4] ।

२. **हरड़जोड़** : (*Vitis cissusquadrangularis*) विटेसी (Vitaceae)

चिंलितनाम : अस्थिसंहारी, हरड़जोड़
प्रयोज्य अंग : मूल तथा पत्र
स्वाद : अस्वाद
रासायनिक : इस पौधे में कैरोटीन ए कैल्शियम आक्सेलेट ए विटामिन सी आदि पाये जाते हैं[5] ।
गुण : दीपन पाचन
उपयोग : टूटी हड्डी को जोड़ने में, टूटी हुई हड्डी को जोड़ने में इसका अंतग्रहण तथा बाहन प्रयोग किया जाता है[6] । मूल का चूर्ण प्लास्टर के प्रभाव जैसा होता है । टूटी हुई हड्डी पर लेप करने से लाभ होता है । कुपचन में पत्ती एवं तने का शाक बनाकर खिलाते है[7–8] ।

३. **पर्णबीज**: (*Bryophyllum calycinum*) क्रसुलेसी(Crassulaceae)

प्रचलितनाम : पथरचूर
प्रयोज्य अंग : पत्ती तथा इसका स्वरस
स्वाद : तिक्त
रासायनिक संगठन : पत्तों में एल्केन्स, सिट्रिक अम्ल, कैल्शियम सल्फेट तथा कैल्शियम आक्सेलेट पाये जाते हैं[9] ।
गुण : वर्णरोपण,सक्तस्तंभक, ग्राही,उत्तेजक
उपयोग : इसके पिसे हुए तथा सीके हुए पत्तों का प्रयोग घाव, कटे हुए हिस्से, विषैले किटदंश में लाभकारी, पत्तों के रस का सेवन[10–11] ।

४. **पलाश** : (*Buteae monosperma*) फ़वेसी (Fabaceae)

प्रचलित नाम : ढाक टेसू
प्रयोज्य अंग : छल, पुष्प, बीज एवं गोंद
स्वाद : तीखा, तिक्त, पुष्प
रासायनिक संगठन : इस पौधे में वसा, तेल, प्रोटीन, राल, ब्यूटीन, ग्लूकोसाइड, ब्यूटेन, इसमें एक गोंद पायी जाती है जिसमे थायमिन एवं रिबोफ्लेवीन होते हैं[12] ।
गुण : कृमिनाशक
उपयोग : अर्श आंतकृमि में बीज के प्रयोग से कुष्ठरोग ददु में लाभ इसके गोंद के प्रयोग से अतिसार एवं प्रवाहिका में लाभ होता है[13] । इसके बीज को नीबू के रस में पीसकर चर्मरोग में लाभकारी[14] ।

५: **सेहुड़** : (***Euphoria nerifolia***) यूर्फोबिएसी (Euphorbiaceae)

प्रचलितनाम : थूहर
प्रयोज्य अंग : मूल, तना, कांड तथा पत्र
स्वाद : तिक्त
रासायनिक संगठन : इस वनस्पति में यूफ़ोल, टैरेक्सेरल, राल, गोंद, छाल में हैक्साकोसोनोल, यूफ़ोरबोल, हेक्साकोसानाएट, जड़ की छाल में मिथाइलिन, सायक्लोआटेनोल तथा ट्युलिपेनिन तत्व पाये जाते हैं[15] ।
गुण : कफ निःसारक
उपयोग : तमक श्वास में पत्तों का स्वरस या तने का रस मधु के साथ देने से लाभ होता है । आन्त्रशूल आध्यान चर्मरोगों में तथा ज्वर प्लीहा वृद्धि में लाभकारी है । इसका दुग्धरास, कर्णशूल तथा त्वचा पर होने वाले फोड़े–फुन्सियों पर लगाने से लाभ[16] ।

६. **परुषक / परुषकम्**(*Grewia asiatica*) टिलीऐसी (Tiliaceae)

प्रचलित नाम : फालसा
प्रयोज्य अंग : मूल की छाल, फल एवं पत्र
स्वाद : आम्ल, फल
रासायनिक संगठन : इसमें ल्यूपियाँल, ल्यूपिनोन, बेट्युलिन, ग्लूकोज, एमिनो अम्ल, सिट्रिक अमल, तथा विटामिन सी तत्व पाये जाते हैं[17]।
गुण : फल शीतल, ग्राही, रुचिकर तृषा शामक
उपयोग : पके हुए फल रुचिकर एवं शोथशामक पत्तियों का बाह प्रयोग छोटे–छोटे फोड़े फुन्सियों पर लाभकारी हृदय रोग तथा पित विकार में पके हुए फलों का रस जल में मिलाकर सेवन करने से लाभ होता है[18] मधुमेह में इसके कॉड की अंतरछाल को जल में भिगोकर, छानकर पीने से से लाभ होता है। इसके फलों में विटामिन सी प्रचुर मात्रा में होने के कारण शुक्रवर्धक होते है[19]।

7. **मधुनाशिनी** (*Gymnema sylvestre*) एस्केलपिडेसी (Asclepidaceae)

प्रचलित नाम : गुइमार
प्रयोज्य अंग : पचांग
स्वाद : तिक्त
रासायनिक संगठन : इसके पत्रों में क्वेरसीटोल एन्थ्राक्वीनोन सेपोमिन तथा कैल्शियम आक्सोलेट तत्व पाए जाते हैं[20]।
गुण : यकृत, हृदय, गर्भाशय को स्वस्थ्य करने में।
उपयोग : मधुमेह में, श्वासरोग, रजोरोग, रुधिर में इन्सुलिन की मात्रा बढाती है। इन्सुलिन ग्लूकोज का विघटन करता है। मधुमेह में इसके पत्रों को चाबने से या पत्र का चूर्ण मधु के साथ सेवन करने से लाभ होता है[21]।

८. **भूम्यामलकी** : (*Phyllanthus niruri*) यूफोरवियेसी (Euphorbiaceae)

प्रचलित नाम : भुई आमला / भौमि ऑबरा
प्रयोज्य अंग : मूल, ताजे पत्र एवं पंचांग
स्वाद : तिक्त कषाय
रासायनिक संगठन : इसके पत्रों में एक कडुवा तत्व फायलैन्थिन तथा हाइपोफालैन्थिन होता है। इसमें क्षारभ, विटामिन–सी क़्वेरसेट्रिन, रूटीन होते हैं। इसके मूल में सायक्लो फ्लेवॉन, बीज में तेल जिसमे रिसिनालिक एसिड, लिनोलिक एसिड तथा लिनोलॉनिक एसिड पाए जाते हैं।
गुण : ज्वरहर, शीतल, पाचन, मूत्रल।
उपयोगः जलोदर, मूत्र रोगों में, दाह, प्रमेह, अतिसार, पत्तों को नमक के साथ मिलकर बाह प्रयोग चर्मरोगों तथा व्रण के लाभकारी एवं मूत्रल गुण वाला इसके पंचाग का कवाथ कास तथा श्वास रोग में लाभकारी है ।

4. **निष्कर्ष**– इस शोध पत्र से यह निष्कर्ष निकलता है कि थारू जनजाति अपने अनुभव द्वारा प्राकृतिक चिकित्सा के अधिकतम उपायों को जानते हैं। प्राकृतिक चिकित्सा की यह पद्धति थारू जनजातियों को परम्परागत रूप से पूर्वजों से विरासत में प्राप्त होती जा रही है। इनके जीवन में वनों में पाये जाने वाली वनस्पतियों का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। वन जहाँ एक ओर जनजातियों के लिए आजीविका का स्रोत उपलब्ध कराते हैं वहीं उनकी जीवन रक्षा में भी अहम भूमिका होती है। जनजातियों का वनौषधीय ज्ञान अनेक बार चमत्कृत करता है, जो आज भी विद्यमान है। जैसे हड्डी टूटने पर हड़जुड़ी की पत्तियों का पेस्ट बनाकर उस स्थान पर बांधने पर और खाने से हड्डी कुछ ही दिनों में जुड़ जाती है। पेट में पथरी होने पर पत्थरचूर की पत्तियों का प्रयोग दर्दों के निवारण के लिए अतिबला के पत्ते का प्रयोग कृष्ठ रोग में, पलाश के बीज का प्रयोग तथा इसके गोंद के प्रयोग से अतिसार में लाभ होता है। थारू लोग खाँसी के इलाज के लिए सेहुड़ की पत्तियों को सेककर उसका कवाथ प्रयोग करते हैं। अतः तराई इलाके में पाई जाने वाली उपरोक्त पौधे औषधीय गुणों से भरे हुए हैं, जिन पर उच्च स्तरीय शोध की आवश्यकता है।

References

1. Jain,S. K. (1991) Dictionary of Indian folk medicine and ethanobotany, Deep Publications, Delhi, India.
2. Lal,B. Suresh (2019) Tribal Development Issues in India, Serial Publications,NewDelhi, India, www.serialspublications.com.
3. Kirthikar, K. R. and Basu, B. D. (1991) Indian medicinal plants, Lalit mohan basu publishers, New Delhi, vol. 1, p. 314.
4. Bhajipale, N. S. (2012) Evaluation of Anti-Arthritic Activity of Methanolic Extract of *AbutilonIndicum,* International J of Ayu and Herbal Medicine vol. 2, no. 3, pp. 598-603.
5. Gupta, A. K. (2003) Quality Standards of Indian Medicinal plants, II, Indian Council of Medicinal Research, New Delhi, India.
6. Chopra, S. S. and Patel, M. R. (1975) Studies on Cissus quadrangularis in experimental fracture repair: effect on chemical parameters in blood, Indian J. Med. Res., vol. 63, no. 6, pp. 824-828.
7. Prasad, G. C. and Udupa, K. N. (1963) effect of *Cissus quadrangularis* on the healing of cortisone treated fractures. Indian J. Med. Res., vol. 51, pp. 667-676.
8. Saburi, A; Adesanya, R.; Marie, T. N.; Najeh , M.; Alain, B. M. and Mary, P.(1999) Stilbene derivatives from *Cissus quadrangularis*. J. Nat. Prod., vol 62, pp. 1694-1695.
9. Aboaba, Adeyinka; Igumoye,S. H. and Flamini,G. (2017) Chemical composition of the leaves and stem bark of *Sterculia tragacantha*, *Anthocleista vogelii* and leaves of *Bryophyllum pinnatum*., J. Essent. Oil. Res., vol. 29, no. 1, pp. 85-92.
10. Afzal, M. G.; Gupta, I.; Kazmi, M.; Rahman, O.; Afzal, J.; Alam, K. R. and Hakeem, M. (2012) Anti-inflammatory and analgesic potential of a novel steroidal derivative from *Bryophyllum pinnatum*, Fitoterapia, vol. 83, no. 5, pp. 853-858.
11. Grover, J. K., and Vats, V. (2002) Medicinal plants of India with anti-diabetic potential. J. Ethnopharmacol., vol. 81, no. 1, pp. 81-100.
12. Dwivedi, Sumeet(2006) Relevance of medicinal herbs used in the traditional system of medicine, Farmavita.net.
13. Dwivedi, Sumeet and Kaul Shefali(2008) Ethnomedicinal uses of some plant species by ethnic and rural peoples of Indore district of Madhya Pradesh, India, Pharma. Review, vol. 6, no. 2.
14. Kumara, swamy M.; Pokharen, Neeraj; Dahal, Santosh and Anuradha, M. (2011) Phytochemical and antimicrobial studies of leaf extract of Euphorbia neriifolia. J. of Med. Plants Res., vol. 5, no. 24, pp. 5785-5788.
15. Rasik, A. M.; Shukla, A.; Patnaik, B. N.; Dhawan, D. K. and Srivastava,K. S. (1996) Wound healing activity of latex of Euphorbia neriifolia., Indian J. of Pharmacology, vol. 28, pp. 107-109.
16. Kumar,M.; Dwivedi, R.; Anand, A. and Kumar, A. (2014) Effect of nutrient on physico-chemical characteristics of phalsa (Grewia subinaequalis DC) fruits, Global J Biosci Biotechnol., vol. 3, pp. 320-323.
18. Khan, A. S.; Hussain,A. and Khan, F. (2006) Nutritional importance of micronutrients in some edible wild and unconventional fruits. J. of the Chem. Society of Pakistan, vol. 28, no. 6, pp. 576-582.
19. Chattopadhyay, S.and Pakrashi, S. (1975) Studies on indian medicinal-plants. 34. Triterpenes from *Grewia-asiatica*, Journal of Indian Chemical Society, pp. 553.
20. Li Xiang-rong (2007) Chemical components and bioactivities of *Phyllanthus niruri* . Tianran Chanwu Yanjiu Yu Kaifa, vol. 19, p. 890.
21. Murugaiyah, V.(2009) Mechanisms of antihyperuricemic effect of *Phyllanthus niruri* and its lignan constituents, J. Ethnopharmacol, vol. 124, no. 2, pp. 233-239.